परिचय

पतरस के प्रथम पत्र के सावधानीपूर्वक अध्ययन के पश्चात उसके दूसरे पत्र का अध्ययन, यह प्रकट करेगा कि ये दोनों बहुत ही भिन्न अभिलेख हैं। यूनानी को एक ओर करके, यदि कोई इन दोनों पत्रों के अच्छे अनुवाद का अध्ययन करता है, वह रुचियों, विषय-वस्तु, शब्दावली, आलंकारिक शैली और ईशविद्या सम्बन्धित विषयों में भिन्नता पर ध्यान दिए बिना नहीं रह सकता। ये भिन्नताएं इतनी बड़ी हैं कि अनेक लोगों ने यह निष्कर्ष दिया है कि ये दोनों अभिलेख एक व्यक्ति के द्वारा नहीं लिखे जा सकते। यदि प्रेरित पतरस ने प्रथम पत्र लिखा, तो विचार इस प्रकार आगे बढ़ता है, उसने दूसरा नहीं लिखा होगा।

2 पतरस का लेखन-सम्बन्धी प्रश्न अन्य परिचय-सम्बन्धी विषयों को बौना कर देता है। पत्र के अनेक विद्यार्थियों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि उत्साही मसीहियों के एक समूह ने, जिन्होंने गलत शिक्षाओं का सामना किया था, यह पत्र लिखा और इसमें प्रेरित का नाम डाल दिया। इसमें पतरस के नाम के साथ होने से उन्होंने सोचा कि पत्र की शिक्षाएं उन्हें गलत शिक्षाओं का खण्डन करने में सहायता करेंगी।

लेखन-सम्बन्धी प्रश्नों की महत्वता

जब अंग्रेजी पाठक दोनों अभिलेखों में भिन्नता को स्पष्ट रूप से देख सकता है, तो यह भिन्नता और भी स्पष्ट हो जाती हैं, जब वह यूनानी पढ़ता है। प्रथम पतरस स्पष्ट वाक्यांशों से भरा है, जिन्हें उत्कृष्ट यूनानी गद्य में लिखा गया है। दूसरा पतरस दिखावटी वाक्यांशों, असामान्य शब्दों और जटिल वाक्यांशों से भरा हुआ है। कई बार वाक्य एक उपयुक्त अन्त में आने के स्थान पर एक-दूसरे में फंसे हुए प्रतीत होते हैं। लेखन शैली में यह अन्तर सम्भवतः अनेकों के यह निष्कर्ष निकालने का मुख्य कारण हो सकता है कि ये पत्र दो भिन्न लोगों के द्वारा लिखे गए थे। यह कहना सुरक्षित है कि नए नियम की किसी भी पुस्तक की विश्वसनीयता को इतनी सशक्त रीति से चुनौती नहीं दी गई, जितनी 2 पतरस को दी जाती है। नए नियम के एक विद्वान ने लिखा, "कैथोलिक पत्रों में से कोई भी नहीं, न ही सम्पूर्ण नए नियम से किसी भी पुस्तक के लेखन के सम्बन्ध और इसके स्थान के विषय में आरम्भिक मसीहियत में इतना विवाद हुआ जितना पतरस के इस दूसरे पत्र के लिए हुआ है।"[1]

उनकी भिन्नताओं के पश्चात भी, 2 पतरस दावा करता है कि यह प्रेरित के द्वारा ही लिखा गया, जैसा पहला पतरस करता है। लेखक का दूसरा पत्र पहले से

बढ़कर है, उसके सुने जाने के अधिकार पर आधारित है कि वह कौन था और उसका प्रभु के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध था। यदि हमें इन दोनों में से किसी को धर्मशील छल के रूप में लेने की जरूरत थी तो पहले पत्र के लेखक के लिए दूसरी पत्री के इस छल का दावा करने का बहाना होता। पत्री के आरम्भिक पद के दावे के अलावा कि वह पतरस ही था, पहले पत्र के लेखक को सुसमाचार की घटनाओं के वर्णन के विषय कुछ भी कहने की जरूरत नहीं थी जहाँ यीशु और पतरस दोनों ही मुख्य चरित्र थे। 2 पतरस का यह मामला नहीं था।

2 पतरस के लेखक ने स्पष्ट रूप से स्वयं को "शमौन पतरस" के रूप में दर्शाया, जबकि पहली पत्री में मात्र "पतरस" ही है। दोनों ही पत्रों में लेखक का "यीशु मसीह के प्रेरित" के रूप में वर्णन किया गया है; परन्तु दूसरे पत्र में, पौलुस की पत्रियों की शैली में, "बंधुवा दास" शब्द जोड़ा गया है। 2 पतरस के लेखक के संक्षिप्त वर्णन में सुसमाचार की दो घटनाओं का संकेत किया गया है जहाँ पतरस और यीशु मुख्य चरित्र थे। यह बात दूसरी पत्री में स्पष्ट है, पहली पत्री से बढ़कर, कि लेखक ने जानबूझकर स्वयं को पाठकों पर प्रेरित के रूप में प्रस्तुत किया जो यीशु की समस्त सेवा में उसके साथ रहा था। उसके अधिकार को उसके दावे के आधार पर सुना जाना था। जब कि पत्री के आंतरिक प्रमाण जाँचने के मापदंड है, 2 पतरस पहले पत्र से बढ़कर प्रामाणिक होने का दावा करता है।

किसी और बात से बढ़कर 2 पतरस के लेखक पर विवाद के विषय ने नए नियम के सूक्ष्म विद्वानों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। यह दावा करना अपर्याप्त है, "2 पतरस को प्रेरित ने लिखा क्योंकि पत्र की शुरुवाती आयत में ऐसा लिखा है। क्योंकि यह एक उत्प्रेरित आलेख है, प्रेरित के द्वारा लिखा गया यह दावा सत्य होना चाहिए।" नया नियम के आलोचक इसे गोल मोल तर्क कहेंगे। जब एक व्यक्ति से पूछा गया, "आप इस दावे को कैसे जानते हैं कि यह प्रेरित पतरस के द्वारा लिखा गया है यह सत्य है?" और उसने उत्तर दिया, "क्योंकि यह उत्प्रेरित है," वह समस्या से बचना चाह रहा था। जब पूछा गया, "आप कैसे जानते हैं कि यह उत्प्रेरित है?" उसने उत्तर दिया, "क्योंकि यह लिखा है इसे प्रेरित पतरस के द्वारा लिखा गया है।" सारा विवाद माने या न माने आरम्भिक पद दावा करते है। यदि ऐसा है तो बात दृढ़ है कि पत्र परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है और यह प्रभु की कलीसिया की अगुआई के लिए उचित है। यदि आरम्भिक दावा सत्य नहीं है और नए नियम के विद्वान पत्र को सत्य और कलीसिया के लिए अधिकारिक रूप से स्वीकार करना चाहता है तो उसे प्रेरणा, अधिकार और सत्य की कुछ काल्पनिक परिभाषाओं को प्रयोग करना है। इन सब कारणों से, 2 पतरस के लेखक के विषय पर प्रश्न चिह्न एक गम्भीर विषय है।

पतरस के लेखन विरुद्ध अभियोग

नया नियम के विद्यार्थियों को प्रमाण और तर्क को समझना चाहिए जिसमें आलोचक इस दावे का इनकार करते हैं कि पतरस की दूसरी पत्री यीशु के किसी

प्रेरित के द्वारा लिखी गई थी जिसका नाम भी पतरस ही था। आलोचक दावे का इनकार नहीं करते क्योंकि वे ईमानदार नहीं हैं। वे उसी ओर जा रहे हैं जिस ओर वे सोचते हैं प्रमाण उन्हें ले जा रहे हैं। जिनका विचार विपरीत है उन्हें प्रमाण को देखना चाहिए।

आलोचक इस बात का दावा करते हैं कि 1 और 2 पतरस एक ही लेखक की रचनाएँ नहीं हैं। यदि पतरस ने पहला पत्र लिखा है तो तर्क यह कहता है उसने दूसरा पत्र नहीं लिखा। उनका दावा कुछ तथ्यों पर आधारित है। पहला, साहित्यिक शैली दोनों पत्रियों की भिन्न है। पहली पत्री अच्छी यूनानी गद्य में लिखी गई है। दूसरी पत्री की यूनानी भाषा बहुत घटिया है (घटिया यह किसी व्यक्ति की परिभाषा पर निर्भर है) जैसे यह अस्वाभाविक, बनावटी और आडंबरपूर्ण है। इस तरह का वाक्य जैसे "बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ" (1:4), "प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे" (1:11), "वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे" (1:19) और "पर ये लोग निर्बुद्धि पशुओं ही के तुल्य हैं, जो पकड़े जाने और नाश होने के लिए उत्पन्न हुए हैं, और जिन बातों को जानते ही नहीं" (2:12) इस पत्री में लच्छेदार भाषा चित्रित होती है। पहली पत्री इसके विपरीत स्पष्ट रूप से अधिक मंद है।

इसके अतिरिक्त पहली पत्री से दूसरी पत्री की विषय वस्तु और सोच भिन्न है। पहले पत्र में "आशा" महत्वपूर्ण है दोनों में शब्द और विषय को लेकर। पतरस की पहली पत्री पाठकों के सताव और कष्ट के साथ निर्वाह करती है उनको यह आश्वासन देते हुए कि अन्त के समय में परमेश्वर की महिमा प्रकट होगी। जब प्रभु वापिस आएगा उनको दोषमुक्त करेगा। जो लोग उन्हें सताते हैं उनके लिए परमेश्वर का न्याय है। जबकि पतरस की दूसरी पत्री प्रभु के आने के विषय चुप है, ऐसा लगता है कि लेखक ने विषय की भूमिका तो दी है, पाठकों के लिए इतनी सान्त्वना और आश्वासन की नहीं है, कि उनको यह समझने में सहायता हो कि प्रभु के आगमन में इतनी देरी क्यों है। यदि "आशा" पतरस के पहले पत्र का मुख्य शब्द है, इस पत्र का मुख्य शब्द "ज्ञान" है। पहले पतरस की पत्री में आगे चलकर क्रूस, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, बपतिस्मा और प्रार्थना पर स्पष्ट रूप से जोर दिया गया है। यह बातें पतरस की दूसरी पत्री में नहीं मिलती हैं।

जबकि दूसरा पतरस में लेखक के कई व्यक्तिगत सन्दर्भों का उल्लेख पाया जाता है, लेकिन आलोचकों का मानना है कि लेखक ने उनको वहाँ इसलिए रख छोड़ा है ताकि वह इस बात की पुष्टि कर सके कि इस पत्री का लेखक स्वयं प्रेरित पतरस था। दूसरा पतरस में लेखक के निम्न व्यक्तिगत उल्लेख पाए जाते हैं: (1) लेखक ने पतरस के नये नाम के बजाय पुराने नाम शमौन का प्रयोग किया है (1:1)।[2] (2) लेखक ने यूहन्ना 21:18, 19 में उल्लेखित यीशु और पतरस के वार्तालाप का संदर्भ दिया है। यहाँ प्रभु ने पतरस को अपनी होने वाली मृत्यु के बारे में बताया है (1:14)। (3) रूपांतर पर्वत पर हुए घटनाओं का लेखक ने

उल्लेख किया है। दूसरे पतरस में उसने कहा कि "पवित्र पहाड़" पर यीशु की "प्रतापमय महिमा" कही गई है (1:16-18)। (4) उसने पिछली पत्री की संक्षिप्त टिप्पणी की है (3:1)। (5) नये नियम में पौलुस की पत्रियों का एकलौता बाहरी संदर्भ, पतरस की पत्री में पाया जाता है जिसके बारे में लेखक ने कहा कि पौलुस ने कुछ ऐसा लिखा, "जिनका समझना कठिन है" (3:15, 16)। इसलिए पौलुस की पत्रियों के संदर्भ के बारे में अध्ययन किया जाना आवश्यक है। आलोचकों का मानना है कि पतरस को पौलुस की पत्रियों के बारे में अधिक जानकारी नहीं थी; लेकिन यदि उसको जानकारी थी भी, तो वह उन पत्रियों को "पवित्रशास्त्र" की श्रेणी में नहीं रखता (3:16)।

दूसरा पतरस और यहूदा की पत्री में स्पष्ट साहित्यिक सम्बन्ध पाया जाता है। अधिकांश विद्वानों का तर्क है कि दूसरा पतरस यहूदा पर आश्रित है न कि यहूदा दूसरा पतरस पर। यदि यह सत्य है तो दूसरा पतरस यहूदा के बाद लिखा गया होगा, अतः यह प्रेरित की मृत्यु, सन् 60 के मध्यावधि, से पहले नहीं लिखा गया होगा। दूसरा पतरस और यहूदा के मध्य साहित्यिक संबंध बड़ा जटिल है। हम इन दोनों पत्रियों के संबंधों के बारे में इस प्राक्थन के अंतिम भाग में विश्लेषण करेंगे।

यह निष्कर्ष कि 1 और 2 पतरस एक ही लेखक के द्वारा नहीं लिखा जा सकता, तो कुछ नये नियम के विद्वानों ने बाहरी, ऐतिहासिक प्रमाण, सांसारिक स्रोत व आरंभिक मसीही स्रोत, जो इन पत्रियों के लेखक के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं, का परीक्षण करने का प्रयास किया है। यहूदा की पत्री के समान दूसरा पतरस का उद्देश्य भी झूठे उपदेशकों को, जिन्होंने कलीसिया को घेर लिया है, का खण्डन करना व उनको निरुत्तर करना है। इस बात का तर्क दिया जाता है कि जिस प्रकार के उपदेशकों का वर्णन दूसरा पतरस में पाया जाता है वे द्वितीय सदी तक नहीं पाए जाते थे। यदि ऐसी ही बात है तो दूसरा पतरस किसी कलीसिया के पवित्र संत के द्वारा लिखा गया होगा जो इन उपदेशकों के प्रभाव को कलीसिया से हटाना चाहता था। वे जानते थे कि पतरस के नाम की पत्री, स्वयं के नाम की पत्री से कहीं अधिक प्रभावशाली होगी। इसका तर्क यह है कि दूसरा पतरस का लेखक या लेखकों की इच्छा यह थी कि वह/वे उस मत का प्रतिनिधित्व करता/ते है/हैं कि यदि पतरस जीवित होता तो वह भी यही बात लिखता।

आरंभिक कलीसिया के लेखकों के बहुत से साक्ष्यों से इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं कि पतरस ही पहली पत्री का लेखक है। दूसरी पत्री का लेखक पतरस के पक्ष में होने के लिए बहुत कम प्रमाण उपलब्ध है। जबकि कुछ लोग इस निष्कर्ष से इनकार करते हैं कि पतरस ने दोनों पत्रियाँ लिखीं हैं, पतरस द्वारा पहली पत्री लिखे जाने का प्रमाण, दूसरी पत्री से अधिक ठोस माना जाता है। इस कारण, बहुत से आलोचक यह मानते हैं कि पतरस की पहली पत्री का लेखक प्रेरित पतरस था, लेकिन दूसरी पत्री किसी अन्य व्यक्ति ने लिखी थी।

इन दोनों पत्रियों के लेखक को प्रमाणित करने के लिए दूसरी और तीसरी

सदी के उन स्रोतों का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है जिसमें इन दोनों पत्रियों के लेखक का वर्णन पाया जाता है। इस कारण, जो इस विषय पर रुचि रखते हैं उन्हें हम समीक्षात्मक टीका की सहायता लेने की सलाह देते हैं।[3] यहाँ हमारा उद्देश्य इस बात की व्याख्या करने का है कि क्यों कुछ लेखक पतरस को पहला पतरस का लेखक मानते हैं पर दूसरा पतरस का लेखक नहीं मानते। विवाद यह है कि पहला पतरस और दूसरा पतरस एक ही लेखक के द्वारा नहीं लिखा जा सकता है। सामान्य लोकप्रिय लेखकों के लेख जो कभी-कभी समाचार पत्रों या दैनिक पत्रिकाओं में पाया जाता है, वे अपनी जानकारी के लिए उदारवादी बाइबल के आलोचकों पर निर्भर रहते हैं। इस कारण, लोकप्रिय प्रेस के द्वारा प्रचारित वक्तव्य अक्सर यह कहते हैं कि 2 पतरस को प्रेरित पतरस ने नहीं लिखा है। तो इस बात की भी अपेक्षा की जा सकती है कि जिन मसीहियों ने अपने जीवन काल का कुछ हिस्सा बाइबल के अध्ययन में नहीं बिताया है तो वे इस बात को सोचकर अचरज करने लगते हैं कि आखिर इस प्रकार का वक्तव्य क्यों दिया जाता है।

पतरस का लेखक होने का मामला

हर एक आपत्ति के लिए विद्वानों ने पतरस को 2 पतरस की पत्री के लेखक होने के संबंध में प्रश्न खड़ा किया है, तो कुछ विद्वानों ने इसका प्रत्युत्तर दिया है। उदाहरण के लिए, दो लेखकों की थ्योरी पर इस समस्या का समाधान करने के बजाय क्या दोनों पत्रियों की लेखन शैली की भिन्नता को किसी अन्य बात के आधार पर करना चाहिए? दोनों पत्रियों के विद्यार्थियों के पास यह प्रमाणित करने का पर्याप्त कारण है कि प्रत्येक पत्री प्रेरित के द्वारा लिखी गयी है।

कुछ सीमा तक, शब्दकोष और भाषा शैली में भिन्नता को इन दोनों पत्रियों में संबोधित विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। फिर भी, दोनों पत्रियों में इस भिन्नता को पर्याप्त कारण नहीं माना जा सकता है। इससे भी बढ़कर, पाँचवीं सदी के जेरोम ने, इन दोनों पत्रियों में भिन्नता के बारे में एक महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किया था। जेरोम एक सतर्क विद्वान थे। उनकी कृति, जो यूरोपीय साहित्य में एक हजार वर्ष तक अग्रणी रही, लैटिन वल्गैट के रूप में प्रकाशित हुई। जेरोम के अनुसार 1 और 2 पतरस की साहित्यिक भिन्नता का कारण यह है कि पतरस ने अपनी पत्रियों को लिखने में दो अलस-अलग लिपिकों की सहायता ली थी।

प्राचीनकाल में, लिपिक, श्रुतिलेखक, सचिव से बढ़कर होता था, जो श्रुतिलेख को अक्षरशः लिखा करता था। वह अपने ग्राहकों को उचित शब्दावली व शब्दों का उचित चयन देकर सहायता करता था। पहला पतरस के अंत में पतरस ने सीलास का जिक्र एक श्रुतिलेखक के रूप में किया है जिसने उसकी पत्री लिखने में सहायता की थी (1 पतरस 5:12)। ऐसा लगता है कि पौलुस ने अक्सर एक श्रुतिलेखक को इस कार्य में लगाया था। रोमियों की पत्री में, तिरतियुस

नामक एक मसीही श्रुतिलेखक ने पौलुस की पत्री में अपनी व्यक्तिगत टिप्पणी जोड़ दी थी (रोमियों 16:22)। यदि पतरस ने 1 पतरस की पत्री लिखते समय सीलास को एक श्रुतिलेखक के रूप में प्रयोग किया था और दूसरा पतरस लिखते समय किसी अन्य की सहायता ली थी, तो इन दोनों पत्रियों की शब्दावली और भाषा शैली में भिन्नता पाया जाना स्वाभाविक है।

एक सचेत पाठक जब 1 पतरस की तुलना 2 पतरस से करता है तो उसे पता चलता है कि 2 पतरस का विषय-वस्तु अलग है, लेकिन इसका विश्लेषण करना इतना कठिन नहीं है। ये दोनों पत्रियाँ दो अलग-अलग उद्देश्यों के लिए लिखी गईं थीं। जो विश्वासी अपने विश्वास के कारण दुःख उठा रहे थे, तो उनके लिए अवश्य था कि पतरस उनको मसीह के दुःखों के बारे में और जब मसीह महिमा में प्रकट किया जाएगा, के बारे में लिखे। लेकिन दूसरी तरफ, जब विषय झूठे उपदेशकों का है, जिनका अनैतिक जीवन और घृणित सिद्धांत, मसीह और उस समुदाय को, जो मसीह का नाम लेते हैं, समझौता करने के लिए खतरा पैदा करता है, तो लेखक को इनका सामना करने के लिए अलग हथियार व रणनीति की आवश्यकता थी। यदि 2 पतरस के उद्देश्य को देखें तो इस पत्री में लेखक ने क्रूस, देहधारण, बपतिस्मा, प्रार्थना या मसीह के छुटकारे के कार्य जैसे संदर्भों का समावेश नहीं किया है, तो इसमें पाठकों को आश्चर्यचकित होने की आवश्यकता नहीं है। दोनों पत्रियों के विषय-वस्तु में भिन्नता होने का तात्पर्य यह नहीं है कि ये दोनों पत्रियाँ दो अलग-अलग लेखकों के द्वारा लिखी गयी थी।

संभवतः आलोचकों का सबसे कमजोर दावा कि पतरस इस पत्री का लेखक नहीं है वह यह है कि इस पत्री में पतरस के व्यक्तिगत उल्लेख का आभाव है। ध्यान देने वाली बात यह है कि कुछ लोगों ने पतरस को पहला पतरस का लेखक होने पर संदेह इस बात से व्यक्त किया है कि पतरस अपने अनुभव का संदर्भ दिए बिना विश्वासियों को यह पत्री नहीं लिख सकता था। उसका प्रभु के साथ व्यक्तिगत संबंध इस पत्री में जोश और रुचि डाल सकता था। यह दुर्भाग्य है कि जब कुछ लोगों ने पतरस को 1 पतरस का लेखक मानने से इसलिए इनकार किया है क्योंकि इसमें प्रभु का बहुत थोड़ा व्यक्तिगत संस्मरण पाया जाता है और अन्य लोग पतरस को 2 पतरस का लेखक होने से इसलिए इनकार करते हैं क्योंकि इसमें प्रभु का कई व्यक्तिगत संस्मरण पाया जाता है। ये दोनों बातें एक साथ नहीं हो सकती है। यह आशा की जाती है कि सुसमाचारों में प्रेरित पतरस का जो चित्र पाया जाता है, उनमें से जिन बातों को वे स्मरण कर सकते थे, उनका वर्णन इन पत्रियों में भी होना चाहिए था। दूसरा पतरस का प्रामाणिकता को इनकार करने का कोई कारण नहीं दिखाई देता है क्योंकि लेखक ने रूपान्तरण जैसे घटनाओं का संदर्भ इस पत्री में दिया है (1:17, 18)।

पतरस ने जब पौलुस की पत्रियों का संदर्भ दिया तो उसने असाधारण टिप्पणी की और उन पत्रियों को दूसरे "पवित्रशास्त्र" करके संज्ञान दिया (3:16)। फिर भी, ऐसा लगता है कि पतरस और पौलुस दोनों 60 के दशक के मध्य में रोम में ही रहते थे और उसी दशक के अंत में वहीं पर वे शहीद हुए। यह

अविश्वसनीय है कि दोनों प्रेरित एक ही शहर में बंदी हों और एक दूसरे की उपस्थिति से अज्ञात हों। पतरस ने रोमियों की पत्री पढ़ी होगी। तो इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह पौलुस की अन्य पत्रियों को भी जानता था। यदि 2 पतरस, 1 पतरस के बाद लिखा गया होगा तो लेखक का पौलुस की पत्रियों का संदर्भ देना समझा जा सकता है।

पौलुस के समान पतरस भी प्रेरितों के जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य और दिशा निर्देश से परिचित था। निस्संदेह, यदि ऐसा नहीं होता तो नया नियम का केनन प्रथम सदी के मध्य तक अस्तित्व में नहीं आता। पतरस ने केनन के बारे में नहीं कहा है। उसने केवल इतना ही कहा है कि किसी ने पौलुस की पत्रियों को अन्य पवित्रशास्त्र के समान बिगाड़ा है। यह कथन प्रेरितों के एक दूसरे के कार्य के प्रति आदर को दर्शाता है।

यदि यह प्रमाणित किया जाए कि 2 पतरस में वर्णित झूठे उपदेशक दूसरे सदी के मध्य तक नहीं थे, तो यह एक निर्णायक तर्क होता कि यह पत्री पतरस के द्वारा नहीं लिखी गयी थी। फिर भी, इस प्रकार का दावा प्रस्तुत करने में कुछ न कुछ कमी रह जाती है। इतिहासकार, सन् 40 से 100 ई. के मध्य, कलीसिया में मसीही शिक्षा की प्रगति के बारे में बहुत थोड़ा जानते हैं। इससे भी बढ़कर, 2 पतरस के झूठे उपदेशकों की शिक्षा के बारे में बहुत थोड़ी जानकारी उपलब्ध है। दूसरा पतरस और यहूदा के मध्य साहित्यिक संबंध स्थापित करना भी एक कठिन कार्य है। वर्तमान विद्वत्ता की परंपरा यह है कि यहूदा की पत्री, 2 पतरस के बाद लिखी गयी थी। लेकिन पुराने विद्वानों का मानना है कि 2 पतरस पहले लिखा गया था। जब कोई भी झूठे उपदेशकों की पहचान कर, जिनसे उनका सामना होता है, 2 पतरस की तिथि निर्धारित करने का प्रयास करता है या 2 पतरस और यहूदा की पत्री के मध्य साहित्यिक सम्बद्धता का विश्लेषण करता है तो इसका आंकड़ा अनिर्णायक रहता है।

यह सत्य है कि अन्य नये नियम की पुस्तकों की तुलना में 2 पतरस को केनन में स्थान निश्चित करने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। कलीसिया के इतिहासकार यूसीबियुस ने चौथी सदी के मध्य संकेत दिया कि कलीसिया के कुछ समूहों में 2 पतरस की वास्तविकता पर प्रश्न उठाए गए थे।[4] फिर भी, इस पत्री का विलंब से स्वीकार किए जाने का प्रसंशनीय विश्लेषण है। दूसरी और तीसरी सदी में मसीहियों के मध्य कई अप्रमाणिक पुस्तकें बांटी गई। उनमें से कई अभी उपलब्ध हैं। उनमें कुछ अप्रमाणिक पुस्तकों में पतरस का नाम भी पाया जाता है; उदाहरणः द्वितीय सदी के आरंभ में लिखे गए दि अपोकालिप्स ऑफ़ पीटर। इसीलिए उचित कारणों से कलीसिया उन दस्तावेजों से साथ सावधानी बरतती थी जो यह दावा प्रस्तुत करती थी कि वह प्रेरित के द्वारा लिखे गए है।[5] यह रुचिकर बात है कि 2 पतरस प्राचीन स्रोतों में बहुधा उद्धृत नहीं किया गया था, इस पर चर्चा भी नहीं होती थी और पतरस के अन्य पत्रियों के समान त्यागा भी नहीं जाता था।

जब प्रमाणों को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से क्रमबद्ध और उनका अवलोकन

किया जाता है, तो आंतरिक और बाहरी प्रमाण अनिर्णायक होता है। फिर भी, इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि 2 पतरस, एक पत्री, जिसे उस प्रेरित ने लिखा जो यीशु के साथ उसकी सेवकाई के दौरान रहा था, को त्यागने का कोई ठोस कारण नहीं है। दो कारण हैं जो इस दावे की पुष्टि करते हैं कि यह पत्री मूलरूप से पतरस की थी। सर्वप्रथम, इस पत्री के आरंभिक शब्द इस बात का दावा प्रस्तुत करते हैं कि यह पतरस की मूल पत्री है, पतरस ने उन घटनाओं की ओर संकेत किया है जब वह यीशु के साथ था, यह पर्याप्त कारण है जो इसे मूल रूप से पतरस द्वारा लिखित पत्री का स्थान प्रदान करता है। दूसरी बात, आदि कलीसिया ने 2 पतरस को मसीहियों के सामूहिक निर्णय के आधार पर नया नियम का एक भाग माना कि पत्री मूल रूप से पतरस का ही है।

यदि 2 पतरस को भूलवश नये नियम में यह मानकर शामिल करते कि यह प्रेरित द्वारा लिखा गया था तो इसका क्या आशय हो सकता था? कुछ का तर्क यह होता कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वे इस प्रकार के तर्क देते हैं : कलीसिया ने वर्षों से इसे लाभकारी पाया है। इससे भी बढ़कर, इस पत्री के लेखक सचमुच बेईमान नहीं बनना चाहते थे, जब उन्होंने इस पर पतरस का नाम लिखा। वे कलीसिया की खुशहाली चाहते थे। आगे, उनका यह मानना था कि यदि पतरस जीवित होते तो वे उन झूठे उपदेशकों पर पूरे अधिकार के साथ भारी पड़ते। उनका विश्वास था कि उन्होंने पतरस को उचित तरीके से प्रस्तुत किया है। इसलिए, यदि पत्री पर उन्होंने पतरस का नाम जोड़कर कोई हानि पहुँचाई थी तो यह पूर्णतया नगण्य था।

जो इस प्रकार का तर्क प्रस्तुत करते हैं तो इससे ऐसा लगता है कि जब वे प्राचीन लेखकों की ईमानदारी का निर्धारण करते हैं तो वे उनके प्रति नरमी बरतते हैं, जो आधुनिक लेखकों के द्वारा स्वीकार नहीं की जाती हैं। यदि एक प्राचीन काल का लेखक जानबूझकर इस पत्री में पतरस का नाम लिखता है और अपने व्यक्तिगत वक्तव्य के द्वारा यह दावा करता है कि वह प्रेरित है, तो वह किसी भी कीमत पर एक ईमानदार व्यक्ति और व्यक्तिगत खराई के लिए नहीं जाना जा सकता है। यह जानते हुए कि यह बेईमान दावे पर आधारित है तो 2 पतरस को स्वीकार करना और ऐसे प्रभु का अनुकरण करना तर्कसंगत नहीं जान पड़ता है, जो इस प्रकार के गुणों का समर्थन करता है। यदि 2 पतरस की पत्री को पतरस ने नहीं लिखा है तो यह छलपूर्ण दावा प्रस्तुत करता है। मसीहियों को इसे केनन में नहीं शामिल करना चाहिए। इस मामले में आलोचक अधिक वास्तविक जान पड़ते हैं जब वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह पत्री पतरस ने नहीं लिखी है; लेकिन इसके बावजूद यह एक महत्वपूर्ण पत्री है जो मसीह की कलीसिया के संचालन के लिए पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित भी है।

बिना किसी हिचकिचाहट के हम 2 पतरस को प्रेरित का आधिकारिक कार्य मानते हैं। इसके साथ ही, हम यह भी विश्वास करते हैं कि उसने इसे पवित्र आत्मा की अगुवाई में लिखा था। हम यह भी स्वीकार करते हैं कि कुछ सीमा तक यह विश्वास का वक्तव्य है। इस दस्तावेज की प्रमाणिकता के बारे में उठाए गए

प्रश्नों का ध्यान से विचार किया जाना चाहिए; फिर भी, ये प्रश्न कोई भी इस पत्री के प्रारंभिक आयतों में प्रस्तुत किए गए लेखक के दावों को नकार नहीं सकता है। जबकि हम उन लोगों का भी आदर करते हैं जो यह कहते हैं कि यह पत्री अप्रमाणिक है और नये नियम से इसे अलग रखा जाना चाहिए, तो जो लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह पत्री अप्रमाणिक है तो उनके दावे में अनियमितता पाई जाती है और फिर भी वे लेखक के आत्म संवेदन धोखे को अनदेखा करना चाहते हैं।

पाठक, तिथि, और लिखने का स्थान

दूसरा पतरस लिखे जाने के स्थान का जटिल प्रश्न का संबंध 3:1 की व्याख्या पर आधारित है। पतरस ने लिखा, "हे प्रियो, अब मैं तुम्हें यह दूसरी पत्री लिखता हूँ" (3:1)। पतरस ने मसीहियों को कई पत्रियाँ लिखीं होंगी। यह आवश्यक नहीं है कि इस आयत में उद्धृत "पहली पत्री" जिसे हम 1 पतरस समझते हैं, ही है। हो सकता है कि प्रेरित ने किसी अन्य पत्री का संदर्भ देते हुए उन पाठकों को यह पत्री भेजी हो जिन्हें हम नहीं जानते हैं और जो 1 पतरस से भिन्न रही हों। हो सकता है कि दूसरा पतरस उन पाठकों के लिए उसकी दूसरी पत्री हो और 1 पतरस के पाठकों के लिए न हो। निस्संदेह प्रेरित ने कई दस्तावेज लिखे जो नये नियम में संरक्षित नहीं किए गए हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस ने पिछली पत्री का संदर्भ दिया है जिसे उसने कुरिंथ के विश्वासियों को लिखा था (1 कुरिंथियों 5:9) और एक और पत्री जो उसने लौदीकिया के विश्वासियों को लिखी थी (कुलुस्सियों 4:16)।

पतरस ने पिछली पत्री के बारे में बहुत थोड़ा बताया है, लेकिन इस पत्री की ओर उसने संकेत दिया है। उसने कहा कि यह दूसरी पत्री है "और दोनों में सुधि दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूँ" (3:1)। प्रेरित के मन में किस प्रकार की सुधि दिलाने की बात थी? दूसरी पत्री में उसने स्वयं और यीशु के मध्य हुई घटनाओं का उन्हें स्मरण दिलाया था (1:14, 17)। आगे, उसने मसीह की शिक्षा को झूठे उपदेशकों के समक्ष, जो कलीसियाओं में घुस गए थे, संरक्षित रखने का स्मरण दिलाया है। पहला पतरस की पत्री 2 पतरस के तुलना में काफी अलग है। पहली पत्री में जो भी स्मरणार्थ बातें हैं वह क्रूस और प्रभु के द्वितीय आगमन की ओर निर्देशित है। पहला पतरस में बाहरी सताव मुख्य विषय है जबकि 2 पतरस में आंतरिक झूठे उपदेशकों का खतरा है। ऐसा लगता है कि 2 पतरस में पाठकों की समस्याओं के साथ लेखक का प्रत्यक्ष जान-पहचान थी। पहला पतरस में संभवतः लेखक उन सूचनाओं पर निर्भर था जो उसने सुनी थी। यह पूर्णतः ज्ञात नहीं है कि कब पतरस ने इसे अपनी "दूसरी पत्री" कहा, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि उसने इससे पहले उन्हीं पाठकों को 1 पतरस लिख भी दिया था।

आधुनिक पाठकों को यह ध्यान रखना होगा कि पिछली पत्री जिसे प्रेरित ने 2 पतरस के प्राथमिक पाठकों को लिखा था वह 1 पतरस के अलावा कोई अन्य

पत्री थी। फिर भी, टीकाओं का प्रबल दृष्टिकोण यह है कि 2 पतरस और 1 पतरस के पाठक एक ही हैं और 1 पतरस के लिखे जाने के कुछ वर्ष पश्चात ही यह पत्री लिखी गयी थी। इसका इस प्रकार तर्क दिया जाता हैः यदि 2 पतरस 3:1 की टिप्पणी पहली पत्री के लिए की गई है, तो जिन पाठकों को 2 पतरस संबोधित करता है वे आसिया के प्रदेशों की कलीसिया है, जिनका तथाकथित वर्णन प्रेरित ने 1 पतरस 1:1 में किया है। यदि ऐसा है, तो 1 पतरस के लिखे जाने के अब कुछ वर्ष बीत चुके हैं। इसके साथ ही, प्रेरित, झूठे शिक्षकों के कलीसिया में घुसने की खबर से भी अवगत हो गया था। यह जानकर कि झूठे शिक्षक सुसमाचार के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को नष्ट कर रहे हैं, तो पतरस ने पहली पत्री से अलग हटकर दूसरे विषय पर उनको संबोधित किया।

इस तर्क की समस्या यह है कि इन दोनों पत्रियों के अंतर को यह बहुत कम संबोधित करता है। इस तर्क के आधार पर आधुनिक पाठक को 2 पतरस में उद्धृत चिंताओं और प्रोत्साहन को समझने के लिए 1 पतरस से कोई सहायता नहीं मिल पाएगी। दूसरी ओर, यदि 2 पतरस 3:1 पहला पतरस को छोड़कर किसी अन्य पत्री को संबोधित कर रहा है, तो दूसरी पत्री के पाठकों की पहचान करने की दूसरे संभावनाओं पर विचार किया जाना चाहिए।

यदि 2 पतरस 3:1 में संबोधित पहली पत्री 1 पतरस नहीं है, तो 1 और 2 पतरस के लिखे जाने के क्रम में कोई निश्चितता नहीं है। इस बात की संभावना भी जताई जाती है कि 2 पतरस, 1 पतरस से पहले लिखा गया था। तब वे क्यों इस क्रम में रखी गई है जैसे वह हमारे पास अभी है? यदि 2 पतरस पहले लिखा गया था, तब जिन्होंने केनन में नये नियम की पुस्तकों को क्रमबद्ध किया उन्होंने इन्हें उलटे क्रम में क्यों नहीं रखा? इन प्रश्नों का उत्तर इतना कठिन नहीं है जैसे कि ये प्रथमदृष्टया प्रतीत होते हैं।

यह स्पष्ट है कि दो बातों का ध्यान रखते हुए पौलुस की पत्रियों को क्रमबद्ध किया गया है। सर्वप्रथम, कलीसियाओं को संबोधित पत्रियों को पहले क्रमबद्ध किया गया है, उसके पश्चात व्यक्ति विशेष को संबोधित पत्रियाँ क्रमबद्ध की गईं हैं। उसके पश्चात, दीर्घ से लघु पत्रियों को क्रमबद्ध किया गया है। इससे यह स्पषट है कि वे उनके लेखन के कालानुक्रमिक क्रम में क्रमबद्ध नहीं किए गए हैं। इसी कारण फिलेमोन जिसको तार्किक रूप से केनन के अनुसार इफिसियों व कुलुस्सियों के संग होना चाहिए था, तीमुथियुस और तीतुस के पश्चात समायोजित किया गया है।

सामान्य पत्रियाँ, लेखक के अनुसार क्रमबद्ध की गई थीं,[6] लेकिन जब एक लेखक की एक से अधिक पत्रियाँ थीं तो यह मानना ठीक है कि उन पत्रियों को उनके आकार अर्थात दीर्घ से लघु पत्रियों के अनुसार क्रमबद्ध किया गया था। निस्संदेह, केवल यूहन्ना और पतरस ने ही एक से अधिक सामान्य पत्रियाँ लिखीं, परंतु हरेक परिस्थिति में, पौलुस की पत्रियों के क्रम का अनुसरण करते हुए, वे दीर्घ से लघु पत्रियों के क्रमानुसार क्रमबद्ध की गई हैं। यदि यह सत्य है, तो पतरस की पत्रियों के क्रम में यह आवश्यक नहीं है कि 1 पतरस, 2 पतरस से

पहले लिखा गया था। पहला पतरस पहले इसलिए रखा गया है क्योंकि यह 2 पतरस से दीर्घ है।

कुछ ऐसे संकेत पाए जाते हैं जहाँ 2 पतरस, 1 पतरस से पहले लिखे जाने की पुष्टि होती है। उदाहरण के लिए, 2 पतरस और यहूदा की पत्रियों के मध्य परस्पर निर्भरता इसकी संभावनाओं को बल देते हैं कि 2 पतरस प्राथमिक रूप से, संभवतः पूरी तरह से, यहूदी मसीही पाठकों के लिए लिखा गया था। दूसरा पतरस और यहूदा की पत्रियां दोनों ऐसी घटनाओं का समर्थन करते हैं जो यहूदी मसीहियों को ही भाती थीं। दूसरा पतरस पाठकों को उन स्वर्गदूतों के बारे में बताती है जिन्हें परमेश्वर ने नहीं छोड़ा, नूह और लूत के समय के अधर्मी लोगों को भी उसने नहीं छोड़ा (2:4-8)। इसके साथ ही दूसरा पतरस उन स्वर्गदूतों के बारे में भी बताता है जो बुरा भला कहकर दोष नहीं लगाते हैं (2:11)। यदि पतरस ने यहूदिया में रहते हुए, रोम की यात्रा पर निकलने से पहले, परंतु यरूशलेम की सभा के कुछ समय पश्चात, अपनी दूसरी पत्री लिखी थी (प्रेरित 15),[7] तो यह उन घटनाओं पर रोशनी डालता जिनसे यहूदी मसीही परिचित थे। आगे यह संभावना भी जताई जाती है कि पतरस और यीशु की कहानियाँ अन्यजातीय बाहुल्य क्षेत्र के बजाय, सूरिया, गलील और उत्तर की ओर की कलीसियाओं में प्रचलित थी। इस कारण पतरस की अपनी मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी (1:14) और रूपांतर (1:17, 18) जैसी घटनाओं को 2 पतरस में स्थान मिला है।

संभवतः 2 पतरस, यहूदियों को लिखे जाने की सबसे कठोर आपत्ति यह है कि इस पत्री में प्रयुक्त यूनानी भाषा अन्य जातीय पाठकों को अधिक भाती है। अनुमान यह है कि यूनानी बोलने वाले यहूदी मसीही समकालीन यूनानी भाषा की अवधारणा से अधिक सहज नहीं थे। आलोचनात्मक टीका, 2 पतरस, फाइलो (मसीह के समकालीन सिकन्दरिया का यहूदी) और लगभग उस समय के अन्य यूनानी साहित्य की यूनानी भाषा में समानताएं पायी जाती हैं।[8] यह अनुमान लगाना कठिन नहीं होगा कि पतरस ने ऐसी भाषा का प्रयोग नहीं किया होगा, या वह ऐसे भाषा का प्रयोग नहीं करेगा जब उसके पाठक यहूदी मसीही हों।

फिर भी, जब हम इस तथ्य को जाँचने का प्रयास करते हैं कि पतरस ने एक प्रतिलिपि लेखक (लिपिक) का उपयोग किया हो जो यूनानी भाषा की विचारधारा से सहज था, तौभी 2 पतरस की भाषा मध्य 60 के दशक या उसके बाद की नहीं हो सकती है। इसके साथ ही, इस बात का प्रमाण पाया जाता है कि जो यहूदी सूरिया/पलिस्तीन में रहते थे वे यूनानी भाषा की कहावतों और यूनानी भाषा बोली जाने वाले समाज की विचार धारा से पूरी तरह सहज थे।[9] यदि प्रेरित पतरस, जैसा हम समझते हैं, इस पत्री का लेखक था, तो इसकी तिथि को मध्य 60 के दशक में रखने पर उसका यूनानी भाषा के प्रयोग पर कोई स्पष्टीकरण प्रस्तुत नहीं करता है। चाहे 2 पतरस की तिथि 40 के दशक के अंत या मध्य 60 की दशक ही क्यों न हो और चाहे यह यहूदिया या रोम से क्यों न लिखा गया हो, कोई भी एक गलीली मछुवे से इस प्रकार की उच्चकोटी की

यूनानी भाषा का प्रयोग करने की अपेक्षा नहीं कर सकता है।

इस संबंध में ऐसा तर्क दिया जाता है कि झूठे भविष्यवक्ता जिनका 2 पतरस में वर्णन किया गया है, कलीसिया की इतिहास के बाद की अवधि में पाए जाते थे। निम्न दो अवधारणाओं के आधार इस तर्क का दुःखांत होता हैः

1. दूसरा पतरस उन झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं के बारे में बहुत थोड़ा बताता है जिनका उसने विरोध किया। यह स्पष्ट है कि वे अनैतिक थे (2:14)। ऐसा लगता है कि आत्मिक अधिकारों का वे बहुत थोड़ा आदर करते थे (2:10, 11)। वे लालची और शोषण करने वाले थे। प्रभु के आगमन के बारे में पतरस की टिप्पणी इन झूठे उपदेशकों/शिक्षकों द्वारा किए जा रहे दावों का स्पष्ट खण्डन था। ध्यान देने वाली बात यह है कि यहाँ द्वैतवाद का कोई संकेत नहीं मिलता है और यह कि यीशु शरीर में नहीं थे, ये दोनों सिद्धांत ज्ञानवाद (Gnosticism) के महत्वपूर्ण तत्व हैं। यह दावा कि 2 पतरस के उपदेशकों की पृष्ठभूमि के आधार पर इस पत्री की तिथि प्रथम सदी के अंत या द्वितीय सदी में स्थापित नहीं की जा सकती है।

2. सन् 40 से 150 ई. के बीच इतिहासकार कलीसिया में मसीही सिद्धांत केविकास के बारे में बहुत कम जानते हैं। द्वितीय सदी में, कलीसिया को कुछ क्षेत्र में ज्ञानवाद (Gnosticism) के खतरे का सामना करना पड़ा था, परंतु इस बात की निश्चितता नहीं है कि यह शिक्षा कहाँ प्रारंभ हुई या यह कलीसियाओं में कैसे घुस गई थी। उपदेशकों के बारे में हमारे ज्ञान और पत्री में झूठी शिक्षा का सामना करने के आधार पर, 2 पतरस की तिथि को सन् 40 के दशक के अंत के विपरीत मध्य 60 के दशक में निर्धारित करना असंभव है। जो लोग 2 पतरस की तिथि को द्वितीय सदी में रखना चाहते हैं, और प्रेरित द्वारा इसको लिखे जाने का इनकार करते हैं, वे अक्सर यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि पत्री में वर्णित उपदेशक कलीसिया में बहुत समय बाद प्रकट हुए हैं। इस तर्क को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त स्रोत उपलब्ध नहीं है। इस कारण, जो यह कहते हैं कि प्रेरित ने इस पत्री को सन् 40 के अंत में लिखने के बजाय मध्य 60 के दशक में लिखा था तो यह ऐसा नहीं हो सकता है कि इस पत्री में जिन उपदेशकों के बारे में कहा गया है उनकी तारीख दो दशक के बाद तय की जाय।

दूसरा पतरस की तिथि को सन् 40 के अंत में निर्धारित करने की गम्भीर आपत्ति यह है कि लेखक, पौलुस की कुछ पत्रियों से परिचित था (3:15, 16)। क्या यह सम्भव है कि पतरस को पौलुस की कुछ पत्रियों की जानकारी सन् 40 के अंत तक थी, जिसकी उसने दूसरी "पत्रियों" से तुलना की थी? सर्वप्रथम, हम देखते हैं कि 2 पतरस 3:15, 16 के वक्तव्य से यह स्पष्ट नहीं है कि पतरस को प्रथमदृष्टया पौलुस की किसी भी पत्री के बारे में ज्ञान था। वह केवल यह जानता था कि कुछ ऐसी भी पत्रियाँ हैं जिनके विषय-वस्तु ओं को समझना कठिन है और झूठे उपदेशकों ने इन कठिन बातों को अपने लाभ के लिए अनुवाद किया था। सन् 40 के अंत तक पतरस को यह पता चल गया था कि पौलुस ने भी कुछ पत्रियां लिखीं हैं। यदि गलातियों की पत्री, प्रेरितों के काम 15 अध्याय के यरूशलेम की

सभा से थोड़ी पहले लिखी गयी थी, तो संभवतः पतरस इससे परिचित था। इसके साथ ही, इसके बारे में यह सोचा भी नहीं जा सकता है कि पतरस ने पौलुस की किसी अज्ञात पत्रियों का अपनी पत्री में संदर्भ प्रस्तुत किया हो। दूसरा पतरस की तिथि को सन् 40 के अंत में निर्धारित करने के लिए 2 पतरस में पौलुस की पत्रियों का संदर्भ होना बहुत बड़ी समस्या नहीं है।

अंदाजन, हम यह सुझाव प्रस्तुत करते हैं कि 2 पतरस, यहूदा, और याकूब की पत्री, कलीसिया के प्रारंभिक दिनों की ओर संकेत करती हैं, जो लगभग सन् 40 के अंत में लिखी गई थी। आगे हम यह भी सुझाव देते हैं कि ये सूरिया/पलिस्तीन परिवेश में किसी यहूदी मसीही की ओर से रचा गया था। यदि यही बात है, तो 2 पतरस, 1 पतरस से पहले लिखा गया था। यहूदा, याकूब और 2 पतरस यरूशलेम कलीसिया के किसी अगुवे ने पलिस्तीन में इधर-उधर तितर-बितर होकर रह रहे यहूदियों को, जो मसीही हो गए थे, लिखा था।

पौलुस की हृदय परिवर्तन की कहानी इस ओर ईशारा करती है कि आरंभिक वर्षों में दमिश्क के यहूदी, विश्वासी बन गए थे। ऐसी संभावनाएं जताई जाती है कि पौलुस का हृदय परिवर्तन के एक दशक के भीतर ही दूसरे शहरों और गाँवों के कई यहूदियों ने मसीह को अपना लिया था। स्पष्ट रूप से कुछ उपदेशक इन यहूदी मसीही समुदाय में घुस आए थे जो मसीही स्वतंत्रता को व्यवस्थामुक्तवाद दिशा देना चाहते थे। ऐसा लगता है कि उन्होंने अपनी स्वतंत्रता का दावा यरूशलेम की कलीसिया के अधिकार से किया होगा। संभवतः उन्होंने इसका समर्थन करने के लिए पौलुस से विनती की होगी। झूठे उपदेशकों का सामना करने के लिए यहूदा और 2 पतरस एक जैसे पाठकों के लिए लिखा गया था। यदि यह सत्य है तो तीनों पत्रियाँ याकूब, यहूदा और 2 पतरस सन् 40 के अंत में लिखी गयी होंगी।

दूसरा पतरस के झूठे उपदेशक

टीकाकारों की आम राय यह है कि जिन झूठे उपदेशकों का 2 पतरस में सामना किया गया है वे एक प्रकार के आदि ज्ञानवाद (primitive Gnosticism) के समर्थक थे।[10] फिर भी, कि ये उपदेशक ज्ञानवादी थे, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। ज्ञानवाद एक द्वैत शिक्षा प्रणाली थी। ज्ञानवादियों का मत था कि सभी अस्तित्व (दिखने वाली वस्तुओं) को भौतिक और आत्मिक, दो भागों में बांटा जा सकता है। आत्मा अच्छा था; तत्व बुरा था। इसलिए, परमेश्वर का पुत्र, चूँकि वह पूर्णतया भला है, तो वह शरीर और लहू में नहीं रह सकता था। उन्होंने यह इनकार किया कि यीशु, अपनी सेवकाई के दौरान, शरीर में थे (2 यूहन्ना 7)। इस बात का ठोस प्रमाण नहीं मिलता है कि 2 पतरस के उपदेशक/शिक्षक द्वैतवाद थे। द्वैतवाद शिक्षा "उस स्वामी का जिसने उन्हें मोल लिया है इनकार करेंगे" को चरितार्थ करता है (2 पतरस 2:1), परंतु केवल ज्ञानवादी ही नहीं थे जिन्होंने प्रभु को इनकार किया था।[11]

जब हम 2 पतरस को बारीकी से पढ़ते हैं, तो पतरस ने जिन झूठे उपदेशकों का सामना किया है उनके बारे में हम अधिक आश्वस्त होकर कुछ भी नहीं कह सकते हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि उसने उपदेशकों का सामना तो किया लेकिन अधिकांश भागों में उनकी शिक्षाओं का खण्डन नहीं किया है। विद्वान लोग इस पत्री को ज्ञानवाद शिक्षा के संदर्भ में, जिसका इसमें सामना किया गया है, पढ़ने का प्रयास करते हैं। ऐसा करने के बाद, जो उन्होंने समझा है उसी आधार पर वे इस पत्री की व्याख्या करते हैं। यह कहना ठीक होगा कि ये उपदेशक अनैतिक थे और व्यवस्थारहित सुसमाचार के समर्थक थे (2:19)। उन्होंने स्पष्ट रूप से यीशु की पूर्ण ईश्वरत्व का इनकार किया (2:1)। चूँकि यीशु पूर्णतया ईश्वरीय नहीं थे, तो उन्होंने "उसके आगमन की प्रतिज्ञा" को तुच्छ जाना (3:4)। उन्होंने अपने ज्ञान को यरूशलेम की कलीसिया के अगुओं से श्रेष्ठ समझा। यही हम 2 पतरस के पृष्ठभूमि में शिक्षा देने वाले उपदेशकों के बारे में कह सकते हैं।

दूसरा पतरस और यहूदा के मध्य संबंध

पतरस का "तुम्हारे मध्य झूठे उपदेशकों" (2 पतरस 2:1) का विवरण और यहूदा का "ये भक्तिहीन हैं, और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं" (यहूदा 4) का विवरण, ध्यान आकर्षित करने वाला है। यह अनपेक्षित है कि समान विचारों वाले उपदेशकों ने पतरस और यहूदा की कलीसिया में घुसकर मुसीबत खड़ी की थी। जो अनपेक्षित है, वह भाषा की सहमति में विस्तृत विवरण है। पतरस और यहूदा ने एक ही उदाहरण का विस्तारण करने के लिए, और असमान्य शब्द और शब्द समूह के चयन के लिए, एक जैसा तर्क वितर्क प्रस्तुत किया है। पतरस का तर्क था कि यदि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को, नूह के दिनों के संसार को, सदोम और अमोरा को, उनके बुरे कार्यों के लिए नहीं छोड़ा तो वह उन अनैतिक व्यक्तियों को भी जो कलीसिया में घुस आए थे नहीं छोड़ेगा (2 पतरस 2:4-9)। यहूदा ने भी इसी प्रकार का तर्क प्रस्तुत किया है। उसका उदाहरण इस्राएली लोग जब मिस्र से निकल आए थे, स्वर्गदूत, और सदोम और अमोरा है। जब दोनों पत्रियों की यूनानी भाषा की तुलना की जाती है तो इसमें इतनी समानताएं पाई जाती हैं कि कई विद्वान यह मानते हैं कि दोनों पत्रियों में घनिष्ठ साहित्यिक संबंध है। (पृष्ठ 139 का चार्ट देखें।)

पतरस और यहूदा दोनों ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से अपनी पत्रियाँ लिखीं। कुछ विद्वान, पतरस और यहूदा के भाषा की समानता का कारण पवित्र आत्मा की प्रेरणा मानते हैं। फिर भी, यह विश्लेषण समस्या का समाधान करने के बजाय जटिल समस्या खड़ी करती है। पवित्र आत्मा ने परमेश्वर का संदेश लिखने के लिए मनुष्यों को कैसे प्रेरित किया (2 पतरस 1:21) यह बाइबल में निर्धारित नहीं है। यद्यपि हम पवित्र शास्त्र के रचना में मानवीय मस्तिष्क और पवित्र आत्मा के मध्य पारस्परिक प्रभाव के यांत्रिकी कार्य का विश्लेषण नहीं कर सकते हैं, लेकिन इतना स्पष्ट हैः पवित्र आत्मा ने लेखक के मस्तिष्क पर अपना कब्जा

नहीं किया और उसको लिखने के लिए आदेश नहीं दिया। यदि ऐसा होता तो हम सभी बाइबल की पुस्तकों की लेखन शैली, शब्दावली और इसमें व्यक्त की गई विचारधारा एक समान होने की अपेक्षा कर सकते हैं।

किस तरह परमेश्वर की आत्मा ने किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा कार्य किया जिन्होंने परमेश्वर के संदेश को लोगों तक पहुँचाने के लिए बाइबल लिखी। प्रत्येक लेखक ने अपनी स्मरण शक्ति और शब्दावली को बनाए रखा। जीवन की जिन स्थितियों का उन्होंने सामना किया उसको उन्होंने बनाए रखा। पवित्र आत्मा ने परमेश्वर-मनुष्य के संबंध के बारे में कोई सैद्धांतिक समझौता प्रस्तुत नहीं किया है। उसने मनुष्य के वास्तविक जीवन के आधार पर ठोस ऐतिहासिक परिवेश में साहित्य उत्पन्न किया है। यहूदा और पतरस दो ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी पत्रियाँ पवित्र आत्मा के प्रेरणा के आधीन होकर लिखी। अतः हम यहूदा और 2 पतरस के भाषा की समानता का खण्डन इसलिए नहीं कर सकते हैं क्योंकि दोनों ही लेखक पवित्र आत्मा से प्रेरित थे।

यह कहना कि यहूदा और 2 पतरस में साहित्यिक समानता है तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि या तो यहूदा झूठे उपदेशकों का विश्लेषण करने के लिए 2 पतरस पर निर्भर रहा, या पतरस यहूदा पर निर्भर रहा या फिर वे दोनों किसी अन्य सार्वलौकिक स्रोत पर निर्भर रहे होंगे। जबकि यदि इस संभावना पर विचार किया जाय कि पतरस और यहूदा अपनी पत्री के लेखन के लिए किसी तीसरे स्रोत पर निर्भर रहे थे तो यह अनावश्यक जटिलता उत्पन्न करता है। इस प्रकार की उपलब्ध स्रोत को प्रमाणित करना या अप्रमाणित करना असंभव है। दोनों पत्रियों में से किसी में भी निर्विवाद अज्ञात स्रोत का विश्लेषण नहीं है। जो हमारे पास 2 पतरस और यहूदा की पत्री है इसी से ही हमें संतुष्ट करना होगा और एक अज्ञात सामान्य स्रोत की खोज को छोड़ना होगा। यदि पतरस और यहूदा ने किसी तीसरे स्रोत का सहारा नहीं लिया है, तो उन दोनों पत्रियों की भाषा की समानता के बारे में यही कहा जा सकता है कि उनमें किसी ने एक दूसरे की सहायता ली होगी। तो यहाँ यह प्रश्न उठता है कि कौन सी पत्री प्रथम है? कौन सी पत्री पहले लिखी गई थी?

पुराने टीकाकारों के अनुसार यहूदा अपनी पत्री के लिए 2 पतरस की पत्री पर निर्भर था। आधुनिक टीकाकार यह मानते हैं कि यहूदा पहले लिखा गया था। यहूदा की पत्री प्रथम लिखे जाने को अधिक समर्थन प्राप्त है। इसका प्रथम कारण यह है कि यहूदा एक छोटी पत्री है तो यह पहले लिखी गई होगी। यह औचित्य जान पड़ता है कि पतरस ने इस पत्री की कुछ विषय-वस्तु ओं को अपनी बड़ी पत्री में समावेश किया होगा, इसके बजाय यह सोचना कि यहूदा ने 2 पतरस से अपने प्रयोग के लिए कुछ विषय-वस्तु ओं को उस में से निकाला होगा। आगे यह भी तर्क दिया जाता है कि यदि यहूदा के पास 2 पतरस था तो जैसे पतरस ने उसे लिखा था, वैसे ही उसने सम्पूर्ण पत्री को ही अपने पाठकों को क्यों नहीं भेजा होगा। यदि कोई व्यक्तिगत संदेश होता तो वह उसे अपने अलग पत्री में संलग्न कर सकता था। इन सब संभावनाओं के पार, जब एक भाषाविद् इन पत्री की उप

शीर्षकों का अध्ययन करता है, जिसमें लेखकों ने अपने आपको अभिव्यक्त किया है, तो वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि पतरस ने यहूदा की पत्री का उपयोग किया होगा, न कि यहूदा ने पतरस की पत्री का। अंत में, चाहे पहले यहूदा या 2 पतरस की पत्री लिखी गई हो, इसकी व्यख्या करना अत्यंत कठिन है। फिर भी, जब 2 पतरस का कोई वाक्य या शब्दांश को यहूदा की पत्री के समानान्तर पढ़ा जाता है तो वह अधिक सार्थक सिद्ध होता है।

उपसंहार

जबकि यह निश्चितता के साथ कहना कठिन होगा कि 2 पतरस किन परिस्थितियों में लिखा गया था, निम्न आंकड़ा इसको समझने में हमारी सहायता करेगा। पौलुस का अन्यजातिय मिशन के आरंभिक चरणों के दौरान, कलीसिया ने संपूर्ण पलस्तीन और सूरिया की यहूदी समुदाय में पैठ बना ली थी। आरंभिक दिनों में, मसीही और गैर-मसीही यहूदियों ने यहूदी आराधनालयों में एक साथ आराधना की होगी, जबकि मसीही लोग प्रभु भोज और यीशु को मसीह जानकर उसकी आराधना करने के लिए रविवार को अलग से मिलते रहे होंगे। पतरस और यहूदा, मसीह के क्रूसीकरण के प्रथम दशक में ही यरूशलेम से निकल गए होंगे। हमारी अनुमान के अनुसार यह संभव है, कि वे यहूदिया और गलील के, यहाँ तक कि उत्तर की ओर दमिश्क और उसके पार के रहने वाले यहूदियों के मन परिवर्तन के मुख्य किरदार रहे होंगे।

एक दशक या इसके आस पास की तिथि के भीतर ही कुछ उपदेशकों ने, संभवतः पौलुस की स्वतंत्रता और अनुग्रह की अपील की गलत व्यख्या कर यह बताने का प्रयास करने लगे कि मसीह के अनुयायियों को भक्तिपूर्ण जीवन जीने की आवश्यकता नहीं है। वे कलीसियाओं में घुस गए थे और उन्होंने कुछ लोगों को अपना अनुयायी भी बना लिया था। यहूदा और पतरस दोनों ने यह पहचाना कि इस प्रकार की शिक्षा से मसीही संदेश को खतरा हो सकता है। बारी-बारी से, पहले यहूदा, फिर पतरस ने उन कलीसियाओं को पत्री लिखी जहाँ उनकी जान पहचान थी और इन उपदेशकों के प्रभाव को निरस्त करने का प्रयास किया। याकूब ने भी लगभग उसी समय और उसी तरह के पाठकों को पत्री लिखी। जैसे-जैसे मसीही लोग विश्वास के अर्थ को जानने लगे और भले कार्यों का अनदेखा करने लगे तो याकूब को भी, यहूदा और पतरस के समान, उनके प्रति चिंता होने लगी थी। याकूब ने इस बात पर जोर दिया कि विश्वास और कार्य साथ-साथ चलता है। जब पतरस ने 2 पतरस लिखा तो उसके पश्चात वह यहूदियों एवं अन्यजातियों को सुसमाचार प्रचार करने के लिए आसिया और कुरिंथ के साथ-साथ अन्य स्थानों में गया। अंत में वह रोम पहुँचा। रोम से कई वर्षों पच्चात् उसने जिसे अब हम 1 पतरस जानते हैं, लिखा।

रूपरेखा

I. अभिवादन: जिन्होंने एक जैसा विश्वास प्राप्त किया है (1:1, 2)

II. मसीह का सच्चा ज्ञान (1:3-21)
   A. जीवन और भक्ति से संबंधित बातें (1:3-9)
   B. अनंत राज्य में प्रवेश (1:10, 11)
   C. सुधि दिलाना (1:12-15)
   D. "उसके प्रतापमय महिमा के गवाह" (1:16-18)
   E. पवित्र शास्त्र का अधिकार और प्रेरणा (1:19-21)

III. झूठे उपदेशक (2:1-22)
   A. झूठे उपदेशकों के विरूद्ध चेतावनी (2:1-3)
   B. परमेश्वर के न्याय की निश्चितता (2:4-10)
   C. झूठे उपदेशकों के चरित्र (2:10-16)
   D. स्वतंत्र होने की प्रतिज्ञा जबकि स्वयं सड़ाहट के दास (2:17-22)

IV. मसीह का द्वितीय आगमन (3:1-16)
   A. "शुद्ध मन को उभारना" (3:1, 2)
   B. "उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई?" (3:3-7)
   C. "प्रभु का दिन" (3:8-10)
   D. प्रभु के दिन के परिदृश्य में पवित्र चाल चलन (3:11-13)
   E. कर्मठता के लिए बुलाहट (3:14-16)

V. अंतिम उलाहना (3:17, 18)

अनुप्रयोग

ज्ञान और विश्वास

ड्यूक यूनिवर्सिटी परिसर के केन्द्र के निकट एक पटिया में ये शब्द खुदे हुए हैं: "ड्यूक यूनिवर्सिटी का उद्देश्य ज्ञान और धर्म, जो यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र की शिक्षा और चरित्र के द्वारा निर्धारित किया गया है, के अनंत संयोजन द्वारा विश्वास का निर्धारण करना है।"

आजकल के कुछ लोगों की प्रवृत्ति विश्वास को एक वायुरोधक डिब्बा और ज्ञान को, विशेषकर जिसका दावा वैज्ञानिक करते हैं, दूसरे डिब्बे में बंद रखने की है। ड्यूक यूनिवर्सिटी की पटिया स्मरण दिलाती है कि यह सदैव ऐसा नहीं था। "यूनिवर्सिटी" और "कायनात" दोनों शब्द इस बात का सुझाव प्रस्तुत करते हैं कि सभी ज्ञान की एक मौलिक एकता है। संभवतः हमने इस बात की खोज नहीं की

होगी कि एकता कहाँ पाई जाती है, परंतु परमेश्वर पर विश्वास करने का तात्पर्य यह है कि सभी ज्ञान का स्रोत उसी में पाया जाता है। यदि ज्ञान का स्रोत परमेश्वर में है, तब कायनात का कुछ अर्थ निकलता है। परमेश्वर स्वयं का परस्पर विरोधी नहीं हो सकता है।

दूसरी पत्री में, पतरस ने झूठे उपदेशकों की विशिष्ट शिक्षा जिसका उसने सामना किया था, का विस्तृत विश्लेषण नहीं किया है। फिर भी, इस पत्री के आरंभिक भाग में ज्ञान का बहुधा संदर्भ यह बताता है कि उसके विरोधी उस ज्ञान का दावा करते थे जो पतरस और दूसरे प्रेरित की समझ के परे था। जब बात ज्ञान की होती थी तो पतरस मैदान छोड़कर नहीं भागते थे। उसने जानने की सर्वोच्च मूल्य की पुष्टि की। इससे भी बढ़कर उसने इस बात की पुष्टि की कि जो ज्ञान उसने मसीह से प्राप्त किया था वह सर्वोच्च है। प्रेरित ने ज्ञान का संयोजन उच्च स्तर की नैतिकता और सदाचार से किया। मसीहियों के लिए ज्ञान "ज्ञान और धर्म, जो यीशु मसीह की शिक्षा और चरित्र के द्वारा निर्धारित किया गया है, का अनंत संयोजन करना है।"

समाप्ति नोट्स

[1]एवरेट्ट एफ. हैरीसन, *इंटरोडक्शन टू दि न्यू टेस्टामेंट* (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्प., 1964), 386. [2]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में आयत 1:1 में "शमौन" लिखा है और अन्य लेखों में "शिमौन" लिखा है, परन्तु "शिमौन" के प्रमाण ज़्यादा मज़बूत प्रतीत होते हैं। यह जब पतरस के लिए प्रयोग हुआ है तो इसकी वर्तनी "शमौन" ही है, जैसा यहाँ और प्रेरितों के काम और 15:14 में भी है। [3]1 पतरस के लेखक का बाहरी प्रमाण का अच्छा स्रोत जे. रैमसे माइकल्स, *1 पीटर*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वोल्यूम 49 (वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1988), xxxi-xxxiv में पाया जाता है। 2 पतरस के लिए चार्ल्स बिग्ग, *एपिस्टल आफ सेंट पीटर एण्ड ज्यूड*, इंटरनेशनल क्रिटिकल कमेंट्री (एडिनबर्गः टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1902), 199-210 देखें। [4]यूसीबियुस, *एक्लेजियास्टिकल हिस्ट्री* 3.3.1, 4; 3.25.3. स्वयं यूसीबियुस को इस पत्री की वास्तविकता पर संदेह था। [5]देखें डॉनाल्ड गथरी, *न्यू टेस्टामेंट इंट्रोडक्सन* (डॉनर्स ग्रूव, इलिनॉइस: इंटर-वार्सिटी प्रेस, 1970), 671-84. गथरी के अनुसार जबकि नये नियम के समय किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम पर दस्तावेज लिखे जाने की सामान्य प्रथा थी, लेकिन इस प्रकार के दस्तावेज को पत्री का स्वरूप नहीं दिया जाता था। [6]यह स्पष्ट नहीं है कि याकूब को यहूदा से पहले क्यों क्रमबद्ध किया गया। [7]प्रेरितों 15:7 में पतरस का यरूशलेम में होने का अंतिम संदर्भ मिलता है। [8]उदाहरण के लिए, देखें रिचर्ड जे. बौखम, *ज्यूड, 2 पीटर*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वॉल्यूम 50 (वाको, टेक्सास: वर्ड बुक्स, 1983), 135-51. [9]इस विषय पर उपलब्ध साहित्य के लिए, देखें मार्टिन हेंगेल, *जूडाईज्म एण्ड हेलेनिज्म* (फिलाडेल्फिया: फॉर्ट्रेस प्रेस, 1974), 1:58-106. [10]ज्ञानवाद (Gnosticism) एक पेचीदा गलत शिक्षा है जो द्वितीय सदी में कई कलीसियाओं घुस आई थी। आदिम शैली की शिक्षा यूहन्ना की पत्रियों और संभवतः कुलुस्सियों और पास्तरीय पत्रियों में पाई जाती है।

[11]कुछ सदियों के बाद ऐरियन विवाद ने भी प्रभु की पूर्ण ईश्वरत्व का इनकार किया था।